दिनाँक :- 05-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)
स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
पेपर :- पाँच

पत्र :- एक
अध्याय :- उत्तरवैदिक काल -

(1) उपकुर्वाण :- वैसे ब्रह्मचारी जो विद्याध्ययन समाप्त कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे।

(2) नैष्ठिक :- ऐसे ब्रह्मचारी जीवनपर्यन्त गुरु के पास रहकर विद्याध्ययन करते थे। उन्हें 'अन्तवासी' कहा गया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते समय समावर्त्तन नामक संस्कार होता था।

गृहस्थ आश्रम :-

शिक्षा समाप्ति के पश्चात मनुष्य गृहस्थ आश्रम में

Scanned with CamScanner

प्रवेश करता था। इस आश्रम को सबसे बड़ा आश्रम बताया गया है। गौतम एवं बौधायन का मत है कि वास्तव में एक ही आश्रम है, वह है गृहस्थ आश्रम। इसी आश्रम में रहकर मनुष्य त्रिवर्ग अर्थात धर्म, अर्थ तथा काम का एक साथ उपयोग करते हुए मोक्ष प्राप्ति योग्य बनता है। इस आश्रम में ही गृहस्थ पाँच महा यज्ञ, हवियज्ञ तथा सोमयज्ञ सम्पन्न करता है। तथा तीन ऋणों से मुक्ति पता है। शूद्र वर्ण को सिर्फ गृहस्थ आश्रम अपनाने की छूट दी गई थी।

तीन ऋण :- देवऋण मनुष्य के जन्म में देवी देवताओं की कृपा के प्रति आभार जताने के लिए इस यज्ञ का अगो जन होता था। इस ऋण में मुक्ति के लिये मनुष्य को यथाशक्ति यज्ञ का अनुष्ठान करना होता था।

ऋषिऋण :- विधिपूर्वक वेदों के अध्ययन से इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

Scanned with CamScanner

पितृऋण :- धर्मानुसार संतानोत्पन्न करके इस ऋणसे मुक्त हुआ जा सकता है

पंच महायज्ञ :-

ब्रह्मयज्ञ :- इसमें वेदो का अध्ययन किया जाता है।

पितृ यज्ञ :- यह मृत पितारो की आत्मा की शांति हेतु किया जाता है जिनमें पितरो का श्राद्ध, तर्पण आदि किया जाता है।

देव यज्ञ :- इसमें देवताओ का पूजन बलि-घृत आदि से अग्नि मे हवन आदि द्वारा किया जाता है।

भूत यज्ञ :- इसमें संसार के समस्त प्राणियों को बलि दी जाती है। बलि भाग को अग्नि में नही डालकर चारो दिशाओ मे रख दिया जाता है ताकि सभी प्राणी उसे ग्रहण कर सके।

मनुष्य यज्ञ :- इसे नृयज्ञ अथवा अतिथि न केवल यज्ञ भी कहा गया है। इसमें मुख्यतः अतिथि सत्कार किया जाताहै। अथर्ववेद में उल्लेख मिलता है कि

अतिथि न केवल गृहस्थ के यहाँ भोजन करता है अपितु उसके सारे पापो का भी भक्षण करता है। बौद्धायन धर्मसूत्र के अनुसार अतिथि चाहे प्रिय हो या अप्रिय उनका आदर सत्कार करने वाला व्यक्ति स्वर्ग लोक का भागी होता था।

वानप्रस्थ आश्रम :- गृहस्थ आश्रम के सारे कर्त्तव्यो को पुरा करने पर मनुष्य इस आश्रम में प्रवेश करता है। वह अपने कुल्ल गृह तथा ग्राम को छोड़कर वन में निवास करता है तथा अपनी इन्द्रियो पर निग्रह करता है। कुछ ग्रंथो मे वानप्रस्थ के लिये वैखानस शब्द का प्रयोग मिलता है। इस आश्रम में अध्ययन एंव ध्यान मुख्य साध्य है।

संन्यास आश्रम :-

इस आश्रम में व्यक्ति सांसारिक गतिविधियों से पूर्णतः दूर हो जाता है तथा मृत्यु से पहले

उसके लिये अपनी मनः स्थिति तैयार करता है।
कुछ विद्वानों का मानना है कि संन्यास आश्रम की संकल्पना पर अवैदिक विचारधारा का प्रभाव है

पुरुषार्थ

पुरुषार्थ का संबंध मनुष्य तथा समाज से है। ये मनुष्य तथा समाज के बीच संबंधों की व्याख्या करते है। पुरुषार्थ का उद्देश्य था मनुष्य तथा समाज से है। ये मनुष्य तथा समाज के भौतिकी तथा आध्यात्मिक सुखों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना। शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए है।

(1) धर्म (2) अर्थ (3) काम (4) मोक्ष

(1) धर्म - धर्म वह तत्व है जो मनुष्य तथा समाज के अस्तित्व को कायम रखता है। यह सामाजिक व्यवस्था का नियामक है। वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि जिस से लौकिक तथा परलौकिक कल्याण की सिद्धि होती है वह धर्म है।" धर्म अद्योपांत मनुष्य के साथ

Scanned with CamScanner

रहने वाला तत्व है। धर्म को कहीं-कहीं कर्तव्यों का संग्रह भी माना गया है।

(2) अर्थ: यह एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ सिर्फ धन अथवा संपत्ति नहीं बल्कि उन समस्त आवश्यकताओं एवं साधनों से है जिनके माध्यम से मनुष्य भौतिक सुखों तथा ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। महाभारत में अर्थ को परमधर्म कहा गया है। बृहस्पति ने अर्थ को जगत का मूल स्वीकार किया है। अर्थ को धर्म के अधीन ही बताया गया है

(3) काम: काम का सहज अर्थ है मनुष्य की सहज इच्छा तथा प्रवृत्तियाँ, परंतु काम पर धर्म का अंकुश लगाया गया है अन्यथा काम का उच्छृंखल रूप समाज के लिये घातक भी हो सकता है।

(4) मोक्ष - मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य स्वीकार किया गया है। इसका अर्थ है पुनर्जन्म अथवा आवागमन चक्र से मुक्ति पाना।

Scanned with CamScanner

उपनिषदों में मोक्ष संबंधी विचारधारा का सम्यक विश्लेषण मिलता है।

संस्कार —

संस्कारों का विधान मनुष्य के शरीर को परिष्कृत तथा पवित्र बनाने के लिये किया गया है। ताकि वह वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास के लिये उपयुक्त बन सके। संस्कार विशेषतः द्विज जातियों के लिए अर्थ रखते थे। शूद्रों के कुछ संस्कार आवश्यक होते थे परंतु उनकी क्रिया थे मंत्रहीन होते थे किंतु विवाह संस्कार में मंत्र का प्रयोग किया जाता था। सूत्रकार गौतम संस्कारों की संख्या 16 बताते हैं जो निम्नांकित

(1) गर्भाधान: गर्भधारण के पहले

(2) पुंसवन: पुत्र प्राप्ति के लिये मंत्रोच्चारण

(3) सीमंतोन्नयन: गर्भ की रक्षा हेतु तीसरे से आठवें महीने के मध्य इस संस्कार को पुरा किया जाता था। इसमें गर्भवती महिला की विशेष सुरक्षा के लिये उसे सजाया-संवारा जाता था।

Scanned with CamScanner